

1 एक और द्रोणाचार्य नाटक में शिक्षा जगत का सच

2 प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे

3 सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष

4 श्री मधुकरराव बापुराव पाटिल खतगांवकर महाविद्यालय

5 शंकरनगर त.- बिलोली, जि- नांदेड

6 भ्रमणध्वनि - 9881641369

7 ईमेल- bhumare1984@gmail.com

8 **शोधसार** - नाटककार ने एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों और
9 विडंबनाओं को लेकर लिखा है। प्रस्तुत नाटक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में राजनीति , शिक्षा
10 व्यवस्था का व्यवसायीकरण , शिक्षा व्यवस्था की समस्या , सत्ता की दास्तान आदि का
11 रहस्योद्घाटन किया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि , कैसे सत्ता और व्यवस्था के दबाव में
12 एक आदर्शवादी शिक्षक अपनी सिद्धांतों के आगे समझौता करने को मजबूर हो जाते हैं। जिससे
13 शिक्षक स्वयं की नैतिक मूल्यों और आदर्शों से संघर्ष करते हैं। नाटक शिक्षा जगत की समस्याओं
14 को छूते हुए दर्शकों को विचार करने पर मजबूर करता है कि , किस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में
15 राजनीति और स्वार्थ ने स्थान पा लिया है। जैसे बुद्धिजीवी वर्ग भी अपनी पहचान खो देते हैं
16 अर्थात् यह नाटक शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार करते हुए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त
17 भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और व्यवसायीकरण को उजागर करता है। साथ ही नैतिकता का पतन ,
18 और द्रोणाचार्य का आधुनिक संदर्भ हमारे सामने रखता है। आज व्यवस्था के द्वारा किस प्रकार
19 आधुनिक द्रोणाचार्य की दुर्दशा हुई है , उसकी और भी संकेत किया है।

20 **बीज शब्द** - शिक्षा व्यवस्था, भ्रष्टाचार, अव्यवस्था , व्यवसायीकरण, पौराणिक पात्र, शिक्षा जगत
21 का यथार्थ, एक और द्रोणाचार्य, आदर्श शिक्षक, नकल, शिक्षा व्यवस्था का सच।

22 **प्रस्तावना** - एक और द्रोणाचार्य इस नाटक के रचनाकार शंकर शेष है। इस नाटक में
23 समकालीन शिक्षा जगत का यथार्थ और पौराणिक पात्रों के माध्यम से वर्तमान युगीन समस्याओं
24 का वर्णन किया है। इस नाटक में दो भाग हैं जिसके प्रथम भाग को पूर्वार्ध और द्वितीय भाग

25 उत्तरार्ध के रूप में है। इस नाटक में अरविंद, यदू, प्रिंसिपल, चंदू, प्रेसिडेंट, विमलेंदु, अश्वत्थामा
26 द्रोणाचार्य, युधिष्ठिर, भीष्म, एकलव्य और अर्जुन आदि पुरुष पात्र हैं तो लीला, कृपी, अनुराधा
27 आदि स्त्री पात्र हैं। इस नाटक के केंद्रीय पात्र अरविंद, पत्नी लीला और विमलेंदु हैं।

28

29

30 **आधुनिक शिक्षा जगत का सच और विभिन्न आयाम -**

31 नाटक का प्रारंभ अरविंद और लीला के संवाद से होता है।
32 आम आदमी को रोजमर्रा के जीवन की घुटन, महंगाई की मार झेलनी पड़ती है। इसी प्रकार के
33 संकटों का सामना लीला और अरविंद भी करते हैं। अरविंद पेशे से अध्यापक है, जो स्वयं के
34 आचरण से आदर्शोन्मुख तत्वों की स्थापना करता है। एक शिक्षक होने के बावजूद उसे स्वयं के
35 घर पर ही अपने सिद्धांतों को तिलांजलि देने मजबूर होना पड़ता है। शिक्षक अपने काम को
36 तभी सुचारू रूप से कर पायेगा जब वह घर, परिवार की आवश्यकताओं से चिंतित ना हो साथ
37 ही अध्यापकों के कामकाज में किसी अन्य व्यवस्था का हस्तक्षेप न हो। अरविंद जैसे शिक्षक
38 अपने कामकाज को ईमानदारी से निभाना चाहते हैं परंतु घर में राशन कार्ड बनाना है, मां
39 का ऑपरेशन भी करना है, इतनी सारी जिम्मेदारियां को निभाते हुए शैक्षणिक कार्यों को
40 भी निभाना पड़ता है।

41 अरविंद की अपने काम पर निष्ठा है। वे किसी भी काम को ईमानदारी से
42 निभाते हैं परंतु परीक्षा में चिट्ठियां नहीं कर देने पर प्रेसिडेंट और गुंडो के निशाने पर आते हैं।
43 आज की शिक्षा व्यवस्था में चिट्ठी की सहायता से शिक्षा प्राप्त करने का शॉर्टकट माध्यम बन गया
44 है। चिट्ठी लेकर पास होने की प्रवृत्ति अत्याधिक बढ़ गई है। साथ ही बिना पेपर लिखे अंक को
45 बढ़ाकर लेने की कुप्रवृत्ति बढ़ गई है। ऐसे में अरविंद की पत्नी नंबर बढ़ाकर देने की वकालत भी
46 करती है। आज प्रमोशन के चक्कर में चाटुकारिता इतनी बढ़ गई है कि, रिश्तों के फल घरों तक
47 पहुंच गए हैं। इसी कारण लीला को महंगाई नहीं दिख पाती। साथ ही घर में जरूरी चीजों के
48 लिए लीला पति को ताने भी मारती रहती है। अपने पति को गलत रास्ता अपनाने के लिए
49 उकसाती है जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने हेतु प्रवृत्त करती है। लीला भ्रष्टाचारी व्यवस्था का
50 साथ देने हेतु कई सारे तर्क प्रस्तुत करती है। जैसे, “तुम्हें यह नौकरी किसके कारण मिली है ?
51 यह मकान, अस्पताल से सुविधा कौन दिलवा रहा है। दो नंबर बढ़ाकर देते तो कौन सा

52 आसमान फट जाता।”¹ अर्थात् लीला अरविंद को बोलने नहीं देती। कई सारे ताने देती रहती है
53 । भ्रष्टाचारी व्यवस्था निजी लाभों के लिए शिक्षक को साथ देने का आग्रह करती है। जैसे ही
54 यदु अरविंद के घर पहुंचता है वैसे ही शहर के कोने-कोने में जो खबर फैल गई है। अरविंद ने
55 प्रेसिडेंट के लड़के को ही नकल करते हुए धर दबोचा है। अरविंद एक सच्चा शिक्षक है, वे छात्रों
56 द्वारा की जा रही बेईमानी देख नहीं पाता अर्थात् नकल करने वाले प्रेसिडेंट के राजकुमार नामक
57 बेटे को धर दबोच लेते हैं साथ ही यही समाचार यदु द्वारा लीला सुनती है तो कहती है कि,
58 “तुम्हें क्या गरज पड़ी थी कर रहा था नकल करने देते? क्या बिगड़ जाता?”² इस प्रकार शिक्षा
59 व्यवस्था में ऐसे नकल करने हेतु पारिवारिक समर्थन मिलते रहेंगे तो शिक्षा व्यवस्था पुरी
60 तरह से भ्रष्ट होने में देर न लगे। यदु द्वारा अरविंद को प्रिंसिपल बनने का लालच भी दिखाते हैं।
61 यदु कहता है कि, “भ्रष्ट व्यवस्था का साथ दिया होता तो प्रमोशन होना पक्का था। अरविंद ने
62 बेवजह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी है। अपने हाथों अपना नुकसान उठा रहा है”³ अरविंद
63 आदर्शवादी शिक्षक है। वे अपने उसूलों पर चलने के आग्रही है। अध्यापक के लिए तो अपने
64 उसूलों पर चलना जीवन-मरण का प्रश्न होता है। यदु बार-बार अरविंद को समझाते हैं कि, मां
65 कैसर से जूझ रही है। विधवा बहन पैसे का इंतजार कर रही है। लड़के को मेडिकल कॉलेज में
66 भेजना है। इसके लिए तो पैसा जुटाना पड़ेगा। यदु तो बार-बार अरविंद को उनकी आर्थिक
67 अभावों का एहसास कराता रहता है। यदु प्रिंसिपल का ही आदमी है। परंतु अरविंद अपने निर्णय
68 पर डटकर रहते हैं। साथ ही नकल किए लड़के की रिपोर्ट यूनिवर्सिटी को भेज देते हैं।

69 अरविंद को यदु याद दिलाता है कि, शिक्षा में किस प्रकार गुंडाराज चलता
70 है। प्रेसिडेंट को नाराज करने पर नौकरी करना मुश्किल हो जाता है। उनके ही एक साथी
71 विमलेंदू ने बड़े आदमी के लड़के को नकल करते समय पकड़ा था तो गुंडो ने चौराहे पर उसकी
72 हत्या की थी। जैसे, यदु कहते हैं कि, “साथ किसने दिया सब बुझदिलों की तरह घर बैठे रहे। गुंडो
73 ने बीच चौराहे पर उसकी जान ले ली, क्या हुआ।”⁴ इस व्यवस्था में जो सच का साथ देते हैं,
74 झूठ का विरोध करते हैं तो उसकी हत्या करके रास्ते से हटाया जाता है। यह आज की शिक्षा
75 व्यवस्था में आम बन गया है। विमलेंदू जैसे सच्चे शिक्षक को डराया जाता है। नकल की रिपोर्ट
76 वापस लेने हेतु उस पर दबाव डाला जाता है। यदु अरविंद को कहते हैं कि, एक सच्चे अध्यापक
77 का साथ कोई नहीं देते। अरविंद की पत्नी लीला उसे समझाती है कि, “कहीं नौकरी से हाथ
78 धोना ना पड़े, कैसे तो घर गृहस्थी चल रही है। खाने के लाले पड़ जाएंगे, बैंक के किस्त कैसे
79 चुका पाओगे।”⁵ अर्थात् एक प्रामाणिक शिक्षक को भ्रष्ट व्यवस्था के साथ मिलाने के लिए
80 प्रिंसिपल अनेक प्रकार की कोशिशें करता है। प्रेसिडेंट भी अपने बेटे की नकल करने का समर्थन

81 करते हैं। तथा लीला को यह समझाते हैं कि , पति अर्थात् अरविंद को समझाकर नकल का
82 मामला वापस लेने का दबाव बनाते है। आज शिक्षा के क्षेत्र में गुंडागर्दी बढ़ रही है। नकल या
83 कोई भी छोटी-मोटी घटना हो तो फसाद होने का डर रहता है। इस नाटक में भी नकल पकड़ी
84 जाने पर उसके समर्थन में प्रिंसिपल से लेकर व्यवस्था भी सहभागी होती हैं। साथ ही प्रिंसिपल
85 को नकल करने वालों की तरफ से कारवाई न करने की धमकी दी जाती है। नकल करने पर
86 उसका विरोध करना , नकल को रोकना सबका दायित्व होता है। जबकि प्रिंसिपल के साथी ही
87 शिक्षा के सभी घटकों का दायित्व है कि, शिक्षा की व्यवस्था को गुणवत्ता से परिपूर्ण बनाए।
88 प्रिंसिपल को जो नौकरी मिली है उसे वे उपकार मानते हैं। साथ ही प्रेसिडेंट के द्वारा नौकरी
89 दिए जाने का हास्यपद समर्थन करते हैं। ऐसे प्रिंसिपल से क्या शिक्षा में सुधार की अपेक्षा की
90 जाती है। यह स्थिति आज की शिक्षा की दुर्दशा को दर्शाती है। जैसे , प्रिंसिपल साहब कहते हैं
91 कि, "प्रेसिडेंट साहब आखिर मालिक है। अन्नदाता है। उनका कॉलेज, उनकी मर्जी। इसलिए तो
92 कहता हूं नौकरी है तो कान बंद कर लो, आंखें मूंद लो, मुंह खुला रखो बोलने के लिए नहीं रोटी
93 खाने के लिए।"6 इस प्रकार वर्तमान शिक्षा संस्थानों में अध्यापकों के साथ प्रेसिडेंट भी और
94 प्रिंसिपल अपने सहपाठियों के साथ गुलामों की तरह व्यवहार करते हैं। अध्यापकों की स्वतंत्रता
95 पर कई सारी पाबंदियां लगाते हैं। अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए शिक्षण संस्थाओं का इस्तेमाल
96 भी करते हैं। कॉलेज के प्रेसिडेंट जब चाहे तब कॉलेज बंद करवा सकते हैं। इतना ही नहीं
97 संस्था, प्रिंसिपल की मर्जी के खिलाफ कोई बोलता है तो नौकरी से निष्कासित भी करते हैं।
98 शिक्षा संस्थानों में से सेवा भाव समाप्त हो चुका है। इस दृष्टि से शिक्षा जगत के भ्रष्टाचार की
99 पोल नाटक के पात्रों से हुई है। ऐसे शिक्षा संस्थानों में प्रमोशन हो या किसी पद पर उन्नति
100 पाना हो तो प्रेसिडेंट की चापलूसी करनी पड़ती है। साथ ही रिश्वत भी देनी पड़ती है। समय-
101 समय पर उन्हें सरकारी विभागों की योजनाओं का लाभ देने में सहायतार्थ काम करना पड़ता
102 है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था का सच नाटक में अभिव्यक्त हुआ है।

103 आज शिक्षा क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र हर जहां पर अराजक और मनमानी जैसी
104 प्रवृत्ति बढ़ रही है। समाज सेवा करने हेतु सरकार की सहायता से कई योजनाएं चलाई जाती हैं।
105 इस योजनाओं में सरकार का ही पैसा होता है। परंतु इस योजनाओं को चलाने के लिए कई
106 संस्थाओं का योगदान भी होता है। चाहे शैक्षणिक संस्था हो या कोई निजी संस्था। हर एक
107 संस्था का उद्देश्य संस्कृति, समाज उत्थान के लिए योगदान देने की जिम्मेदारी होती है। परंतु
108 वर्तमान शिक्षा संस्थानों में शिक्षा व्यवस्था कठपुतली की तरह काम करती है। जैसे नाटक में एक
109 संवाद आया है कि, " वह प्रोफेसर को अपने बाप का नौकर समझता है और कॉलेज को अपनी

110 जायदादा”7 संस्था के रिश्तेदारों को परीक्षा में नकल करने हेतु अध्यापकों को सहायता करने के
111 लिए कहा जाता है। इतना ही नहीं परीक्षा में अंक बढ़ाने का दायित्व अध्यापकों को निभाना
112 पड़ता है। साथ ही संस्था के किसी भी सदस्यों के बेटे या लड़के जब स्कूल में पढाई करते हैं तब
113 उनकी सेवा में हाजिर होना पड़ता है। क्योंकि निजी शिक्षण संस्थानों के अध्यापकों
114 की पदोन्नति प्रेसीडेंट और प्रिन्सिपल के हाथों होती है। परिणामस्वरूप अध्यापकों को अन्य
115 कार्यों में जैसे चुनाव के दौरान काम पर लगाया जाता है। जैसे संस्था का कोई व्यक्ति चुनाव
116 लड़ता है तो उनके लिए वोट जुटाने पड़ते हैं। साथ ही उनके प्रचार-प्रसार का कार्य भी करना
117 पड़ता है। परिणामस्वरूप शैक्षणिक गुणवत्ता दुष्प्रभावित हो जाती है। इतना ही नहीं शिक्षण
118 संस्था के अनुकूल कार्य न करने पर अध्यापकों को धमकाया भी जाता है। इस नाटक में भी
119 प्रेसिडेंट के लड़के को बचाने के लिए काम न करने पर प्रिंसिपल तथा अन्य अध्यापकों को
120 धमकाया जाता है। जैसे, “कल तक अपने रिपोर्ट नहीं बदली तो उसके परिणाम भयंकर होंगे। मैं
121 कॉलेज को बंद कर दूंगा।” 8 यह कॉलेज के प्रेसिडेंट कॉलेज को अपना मालिकाना हक समझते
122 हैं। आज के शिक्षा संस्थानों की हकीकत इससे भी कई अधिक है। अरविंद जिस कॉलेज में
123 अध्यापक है वहाँ के प्रेसिडेंट के बेटे की शिकायत वापस न लेने पर अरविंद को धमकी देते हैं
124। कॉलेज बंद करने और उसे ताला लगाने की। इस प्रकार की धमकी अध्यापकों को देकर उन्हें
125 डराते हैं। जिन्हें शिक्षक और छात्रों से कोई लेना देना नहीं है। जब तक उनका स्वार्थ पूरा होते
126 रहता है तब तक वे शिक्षा और अध्यापकों को अपना मान सम्मान देते हैं। जिस शिक्षा कॉलेज में
127 समता की बात की जाती है। संस्कार होते हैं वहाँ पर दिन-ब-दिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं।
128 परंतु वर्तमान में शिक्षा संस्थानों में भेदभाव की नई परंपरा शुरू हुई है जहाँ पर गरीब - अमीर,
129 जाति और धर्म भेद की प्रथा शुरू हो चुकी है। जैसे की , नाटक में प्रेसिडेंट के बेटे के साथ जो
130 उधर भाव दिखाया है वह किसी पिछड़ी जाति के या गरीब के प्रति दिखाया होता तो
131 परिस्थितियों में सुधार हो जाता। परंतु चंदू जैसे होनहार छात्र की नकल पकड़ने पर उसे
132 निष्कासित किया जाता है। शिक्षा व्यवस्था में माफिया , गुंडे लोगों के प्रवेश से शिक्षा व्यवस्था
133 का स्तर दिन-ब-दिन चिंतनीय बनता जा रहा है। इस नाटक में अरविंद काम करने वाले
134 प्रामाणिक अध्यापक है। उसे भी पत्नी तथा शिक्षा जगत के लोग भी कार्य करने नहीं देते हैं।
135 बल्कि अरविंद पर यह कहकर दबाव डाला जाता है कि , जिससे अरविंद और अध्यापकों को
136 प्रेसिडेंट का पक्ष लेना पड़ता है। जैसे , “इसमें डरने की क्या बात है। अगर यह लोग विमलेंदु की
137 हत्या कर सकते हैं तो तुम्हारी क्यों नहीं ? हर बात तुम्हारे खिलाफ पड़ रही है। जाओ रिपोर्ट
138 वापस ले लो”9। साथ ही उनकी हत्या की भी धमकियां दी जाती रही है। इस प्रकार अरविंद ने
139 जो प्रेसिडेंट के बच्चे की नकल की रिपोर्ट की है तब से उस पर कई प्रकार के दबाव डाले जाते हैं।

140 आज की शिक्षा व्यवस्था का सच यह है कि , ईमानदारी से किसी को भी काम करने नहीं देते ।
141 इस व्यवस्था के विरोध में जो भी आवाज उठाता है उसका शोषण किया जाता है।

142 **निष्कर्ष -** एक और द्रोणाचार्य इस नाटक में पौराणिक और आधुनिक पात्रों का समन्वित रूप
143 अभिव्यक्त हुआ है । इस नाटक में कथा वस्तु पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के रूप में दो भागों में
144 विभाजित है । एक भाग में मुख्य रूप से प्रोफेसर अरविंद के इर्द-गिर्द यह कहानी घूमती
145 है। अरविंद जो एक ऐसे शिक्षक है । अपने शैक्षणिक आदर्श को बनाए रखना चाहते हैं। लेकिन
146 कॉलेज में भ्रष्टाचार और सत्ता के दबाव के कारण उन्हें संघर्ष करना पड़ता है । साथ ही नाटक के
147 उत्तरार्ध में पौराणिक कथा द्रोणाचार्य के माध्यम से वर्तमान में अरविंद के समानांतर चलती
148 कथा आगे बढ़ती है। इस नाटक में मुख्य रूप से आधुनिक द्रोणाचार्य के रूप में अरविंद है। उसे
149 सत्ता के दबाव के कारण कई बार समझौता करना पड़ता है। द्रोणाचार्य की जो विरासत आदर्श
150 के रूप में मिली हुई थी लेकिन यह नाटक दिखाता है कि , कैसे सत्ता और व्यवस्था के कारण
151 शिक्षक के आदर्श भी उध्वस्त होते जा रहे हैं। यह नाटक शिक्षा में फैली अराजक व्यवस्था पर
152 प्रहार करता है साथ ही शिक्षा जगत में व्यवसायीकरण , राजनीतिक हस्तक्षेप और भ्रष्टाचार को
153 सच्चाई के साथ प्रस्तुत करता है। अरविंद जैसे आदर्शवादी शिक्षकों का संघर्ष और व्यवस्था के
154 सामने उनकी हार को यह नाटक व्यक्त करता है। यह नाटक वर्तमान शिक्षा की व्यवस्था पर
155 साथ ही सामाजिक व्यवस्था पर जो करारा चोट करता है । उन पर सोचने के बाध्य बनाता
156 है ।

157

158

159 **संदर्भ सूची -**

- 160 1. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
161 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 10
- 162 2. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
163 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 16
- 164 3. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
165 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 22
- 166 4. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
167 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 27

- 168 5. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
169 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 31
- 170 6. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
171 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 40
- 172 7. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
173 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 48
- 174 8. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
175 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 50
- 176 9. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष, प्रकाशक किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन
177 वर्ष 2007 पृष्ठ-क्रमांक - 55
178
179